

सतत विकास का भारतीय ग्रामीण समाज पर प्रभाव

प्राप्ति: 21.08.2026
स्वीकृत: 12.09.2026

65

डॉ० सीमा रानी

असिस्टेंट प्रोफेसर (सामाजशास्त्र विभाग)
इस्माईल नेशनल महिला (पी.जी.) कॉलेज, मेरठ
ईमेल: seema33dagar@gmail.com

सारांश

आज के इस परिवर्तनशील युग में ग्रामीण क्षेत्रों में काफी बड़े बदलाव हो रहे हैं। सतत विकास ग्रामीण संरचना को परिवर्तित करने में सहायक सिद्ध हो रहा है। सतत विकास का उद्देश्य आर्थिक विकास, सामाजिक समावेशन, और पर्यावरण संरक्षण को एक साथ लाना है जो गरीबी, असमानता और जलवायु परिवर्तन के साथ-साथ वैश्विक प्रगति को भी बल देते हैं। आज ग्रामीण समाज के लोगों के जीवन स्तर में धीरे-धीरे जो सुधार हो रहा है वह सतत विकास की बड़ी उपलब्धि माना जा सकता है। ग्रामीण समाज में सतत विकास के कारण कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, महिला सशक्तिकरण तथा प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं।

प्रस्तुत शोध पत्र ग्रामीण सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय संरचना पर सतत विकास के प्रभावों के अध्ययन पर केंद्रित है।

मुख्य शब्द

सतत विकास, आर्थिक विकास, सामाजिक समावेशन, पर्यावरण संरक्षण

प्रस्तावना

आज के इस परिवर्तनशील युग में सतत विकास की अवधारणा वैश्विक स्तर पर अत्यधिक महत्वपूर्ण हो गई है। यह एक बहुत व्यापक अवधारणा है, जिसमें अनेक पहलू समाहित हैं। इस व्यापकता के भीतर सतत विकास के 17 लक्ष्य भी विद्यमान हैं। सतत विकास विचारधारा का लक्ष्य असमानताओं को कम करके लोगों के लिए अवसर बनाना है। सतत विकास का उद्देश्य आर्थिक विकास, सामाजिक समावेशन और पर्यावरण संरक्षण को एक साथ लाना है। जो गरीबी, असमानता और जलवायु परिवर्तन के साथ-साथ वैश्विक प्रगति को भी बल देते हैं। सतत विकास साझेदारी को बढ़ावा देकर वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों के लिए लचीले समाज और एक स्वस्थ धरती बनाने

**This article has been peer-reviewed by the Review Committee of Shodhmanthan.*

का प्रयत्न करता हूँ ताकि संसाधनों का उचित और समान रूप से उपयोग हो सके। भारत घनी आबादी वाला एक विविधतापूर्ण देश है, यहाँ की अधिकांश जनसंख्या आज भी गांवों में निवास करती है। भारतीय गांव उद्योग, और संस्कृति का आधार हैं। ग्रामीण समाज के विकास हेतु सरकार द्वारा विभिन्न योजनाएं प्रारम्भ की गयी परन्तु संरचनात्मक कमियों के कारण ग्रामवासियों को इन योजनाओं का लाभ नहीं मिल सका। जनाधिक्य, बेरोजगारी, प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन तथा पर्यावरणीय समस्याओं ने ग्रामीण क्षेत्रों के विकास को चुनौतीपूर्ण बना दिया है, इन चुनौतियों का सामना करने हेतु सतत विकास की अवधारणा बहुत महत्वपूर्ण हो गई है। ग्रामीण क्षेत्रों में सतत विकास कृषि सुधार, जल संरक्षण, ऊर्जा, शिक्षा, रोजगार तथा सामाजिक जागरूकता के माध्यम से गांव की संरचना को प्रभावित कर रहा है।

सतत विकास— सतत विकास आज के युग की बहुत ही महत्वपूर्ण अवधारणा है। सतत विकास वह विकास है। जिसमें वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को इस प्रकार पूरा किया जाता है जिससे कि भविष्य पर कोई बुरा प्रभाव न पड़े।

ब्रुंडलैंड आयोग 1987 के अनुसार सतत विकास ऐसा विकास है जो भविष्य की पीढ़ियों को अपनी जरूरतों को पूरा करने की क्षमता से समझौता किए बिना, वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करता है।

सतत विकास इस बात पर बल देता है कि आर्थिक प्रगति इस प्रकार होनी चाहिए कि वह हमारे पर्यावरण को नष्ट न कर सके तथा प्राकृतिक संसाधनों का उचित प्रयोग हो सके। यह मुख्य रूप से तीन स्तम्भों आर्थिक विकास, सामाजिक न्याय एवं पर्यावरण संरक्षण पर टिका हुआ है।

ग्रामीण समाज— गांव भारतीय समाज की एक आधारभूत सामाजिक-आर्थिक इकाई है। गांव लोगों का केवल एक निवास स्थान ही नहीं है बल्कि यह कृषि अर्थव्यवस्था पर आधारित एक ऐसा समुदाय है जहाँ लोगों के मध्य अनौपचारिक सामाजिक संबंध होते हैं। परंपराएं तथा रीति-रिवाज संपूर्ण सामाजिक – आर्थिक जीवन को प्रभावित करते हैं।

गांव भारतीय अर्थव्यवस्था तथा संस्कृति की नींव है। परन्तु वैश्वीकरण के इस युग में बढ़ती जनसंख्या, बेरोजगारी, प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन तथा पर्यावरणीय समस्या ने ग्रामीण क्षेत्रों के विकास की गति को धीमा किया है, इस चुनौतीपूर्ण स्थिति में सतत विकास की अवधारणा बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य भारतीय ग्रामीण संरचना पर सतत विकास का सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय प्रभावों का अध्ययन करना है।

अध्ययन पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। द्वितीयक स्रोतों में पुस्तकों, सरकारी रिपोर्ट, शोधपत्र एवं जर्नल तथा इंटरनेट स्रोतों को शामिल किया गया है।

साहित्य समीक्षा

मधुसूदन घोष (2017) ने अपने अध्ययन में पाया कि ग्रामीण विकास हेतु की गई सार्वजनिक

पहल पर्याप्त नहीं है। बेहतर भौतिक और सामाजिक अवसंरचना और आजीविका के अवसर, कृषि उत्पादकता और उत्पादन को बढ़ाते हैं, साथ ही साक्षरता और जीवन प्रत्याशा में सुधार करते हुए गरीबी और शिशु मृत्यु दर को कम करते हैं।

एम.जांगिड़ (2020) के अनुसार, ग्रामीण क्षेत्रों में गरीब वर्गों तथा महिलाओं की आर्थिक स्थिति सुधारने में स्वयं सहायता समूहों ने प्रयास किया है। जिसके कारण उनकी सामाजिक स्थिति में सुधार हुआ तथा पारंपरिक जमींदार-मजदूर के संबंधों में परिवर्तन भी आया है।

के. जे. श्रीनिवास तथा बी.साई गिरीधर (2021) के अनुसार, सतत विकास कि जड़े ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों की आजीविका में निहित है। सतत ग्रामीण विकास की प्राप्ति तभी हो सकती है जब आर्थिक स्थिरता, बुनियादी ढांचे की चुनौतियां, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और सामाजिक देखभाल जैसे पहलुओं का समाधान किया जाए।

वैदेही पाठक और समीर देशकर (2023) के अनुसार, जब ग्रामीण क्षेत्रों में आधारभूत संरचना, पर्यावरण संरक्षण तथा तकनीकी नवाचार एक साथ आते हैं, तो यह ग्रामीण शहरी पलायन को रोकता है। यह पलायन रुकने से ग्रामीण संयुक्त परिवार कम विघटित होते हैं जिससे सामाजिक तानाबाना संरक्षित रहता है।

एस. भट्टाचार्य और अन्य (2025) ने अपने अध्ययन में पाया कि जल संरक्षण और सतत परिस्थितिकी प्रणालियों के विकास ने गांव में सामाजिक समरसता में वृद्धि की है जिसके कारण सामूहिक निर्णय (जैसे ग्राम सभाएं) की प्रक्रिया मजबूत हुई है।

पूर्व में हुए अध्ययनों के विश्लेषण से ज्ञात होता है की सतत विकास ग्रामीण संरचना को प्रभावित करता है। विभिन्न अध्ययनों में महिला सशक्तिकरण, शिक्षा, पर्यावरण संरक्षण, तथा खेती में सुधार को गांवों के उत्थान का मुख्य आधार माना गया है। पूर्ववर्ती अध्ययनों में किसी एक पहलू पर अधिक बल दिया गया है अतः ग्रामीण समाज की समग्र संरचना के प्रभाव का अध्ययन अति आवश्यक हो जाता है यही इस शोध की आवश्यकता एवं प्रासंगिकता है।

सतत विकास और भारतीय ग्रामीण संरचना

भारतीय ग्रामीण सामाजिक –आर्थिक संरचना में परम्परात्मक रूप से जाति व्यवस्था, संयुक्त परिवार प्रणाली, कृषि आधारित अर्थव्यवस्था, पशुपालन तथा पारंपरिक लिंग आधारित भूमिकाएं समाहित रही हैं, सतत विकास की नीतियों ने इन संरचनाओं को गहराई से प्रभावित किया है।

सतत विकास का सामाजिक प्रभाव

पारंपरिक ग्रामीण समाज पूर्ण रूप से जाति एवं लिंग आधारित श्रम विभाजन पर आधारित था। सतत विकास की योजनाओं के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में न केवल शिक्षा का प्रचार और प्रसार हुआ है बल्कि परंपरागत स्तरीकरण की मान्यताओं में भी परिवर्तन हुआ है। आज गांव में जातीय तथा लैंगिक असमानता में कमी आई है जिसके कारण श्रम विभाजन के प्रतिमान बदल रहे हैं। गांव के सतत विकास हेतु सरकार द्वारा प्रारंभ की गई अनेकों योजनाओं जैसे मनरेगा, प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना, जल जीवन मिशन आदि के कारण न केवल ग्रामीणों को वैकल्पिक जीविका के साधन प्राप्त हुए हैं बल्कि महिलाओं की निर्णय लेने की क्षमताओं में भी अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। स्वयं सहायता

समूह, सरकारी योजनाओं, जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से विद्यालयों की संख्या में वृद्धि हुई है और बालिका शिक्षा को भी प्रोत्साहन मिला है। शिक्षा के कारण ग्रामीण महिलाएं आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हुई हैं, जिसके कारण उनकी सामाजिक स्थिति में परिवर्तन आया है। आधुनिक विकास योजनाओं के कारण महिलाओं की सामाजिक भागीदारी में वृद्धि हुई है। इस प्रकार शिक्षा, जन सहयोग एवं जागरूकता तथा सोशल मीडिया के कारण सामाजिक समता में भी वृद्धि हुई है।

सतत विकास का आर्थिक प्रभाव

वैश्वीकरण के इस युग में आज कृषि की आधुनिक तकनीकों तथा आधुनिक सिंचाई आदि के कारणों से कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई है। आधुनिक कृषि तकनीक, जैविक कृषि तथा जल संरक्षण ग्रामीण आत्मनिर्भरता का महत्वपूर्ण आधार है। विभिन्न स्वयं सहायता समूह तथा ग्रामीण रोजगार योजनाओं के माध्यम से महिलाएं आर्थिक रूप से सशक्त हुई हैं, जिसके कारण महिलाओं की सामाजिक भागीदारी में वृद्धि हुई है। सरकार द्वारा चलाई गई विभिन्न ऋण योजनाओं के माध्यम से ग्रामीण उद्योग, डेयरी उद्योग, हस्तशिल्प तथा लघु उद्योगों का विकास हुआ है। जिससे रोजगार के अवसर बढ़े हैं। सतत विकास की इन योजनाओं द्वारा किसानों तथा परिवार के अन्य लोगों की आय की स्थिति में सुधार हुआ है। सतत कृषि की आधुनिक तकनीकों के कारण ग्रामीणों की सोच में परिवर्तन आया है।

सतत विकास का पर्यावरणीय प्रभाव

ग्रामीण समाज के विकास हेतु पर्यावरण संरक्षण अति आवश्यक है। जलवायु परिवर्तन सबसे अधिक ग्रामीण जीवन तथा किसानों को प्रभावित करता है। ग्रामीण समाज के उत्थान हेतु आवश्यक है की सतत विकास के माध्यम से प्राकृतिक संसाधनों का संतुलित उपयोग किया जाए।

किसी भी देश का विकास ऊर्जा स्रोतों पर निर्भर करता है। भारत में जीवाश्म तथा नवीनीकरणीय ऊर्जा का प्रयोग किया जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में आज सरकार द्वारा सौर ऊर्जा तथा बायो गैस के उत्पादन पर जोर दिया जा रहा है, जिससे आज गांव में सौर ऊर्जा तथा बायो गैस को बढ़ावा दिया जा रहा है। ग्रामीण समाज में वृक्षारोपण कार्यक्रमों के कारण पर्यावरण संतुलन बनाए रखने का प्रयत्न किया जा रहा है। गांव में जल प्रबंधन योजनाओं के कारण जल संरक्षण पर बल दिया जा रहा है, जल प्रबंधन योजनाओं जिसमें फव्वारा सिंचाई इत्यादि की सहायता से भूजल संरक्षण को बढ़ावा मिला है। स्वच्छता योजनाओं जैसे स्वच्छ भारत मिशन के कारण गांव की स्वच्छता और पर्यावरण पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

सतत विकास की चुनौतियां

यद्यपि आज भारत में शिक्षा का प्रसार हो रहा है परंतु जागरूकता की कमी के कारण शिक्षा बहुत से लोगों की पहुँच में नहीं है। सरकार तथा अन्य गैर सरकारी संस्थाओं के माध्यम से गांवों के विकास हेतु जो वित्तीय संसाधन प्रदान किए जाते हैं एक तो वे पर्याप्त नहीं होते हैं और दूसरा भ्रष्टाचार के कारण इन वित्तीय संसाधनों की कमी पड़ जाती है, जिससे विकास कार्य प्रभावित होता है। कुशल नेतृत्व की कमी के कारण भी योजनाओं का सही क्रियान्वयन नहीं हो पाता है। आधुनिक तकनीक, सिंचाई सुविधाएं तथा आधुनिक कृषि यंत्रों तक किसानों की पहुँच बहुत कम है जिसके कारण उत्पादन

और विकास कार्य मंद गति से होता है। पंचायतो द्वारा भी अपने कार्य सुचारु रूप से नहीं किए जा रहे हैं। यदि ग्राम पंचायतों के द्वारा सड़क, जल, स्वच्छता, शिक्षा, तथा स्वास्थ्य संबंधी योजनाओं का सही ढंग से संचालन किया जाए तो निश्चित रूप से गांवों का सतत विकास संभव है।

निष्कर्ष

भारत जनसंख्या की दृष्टि से विश्व का दूसरा सबसे बड़ा देश है। इतनी विशाल जनसंख्या के साथ सतत विकास के लक्ष्य को प्राप्त करना बड़ा कठिन है परंतु फिर भी सरकारी योजनाओं, स्वयं सहायता समूहों तथा विभिन्न सरकारी संस्थाओं के माध्यम से ग्रामीण समाज में अनेकों परिवर्तन हुए हैं। सतत विकास ने ग्रामीण सामाजिक, आर्थिक, पर्यावरणीय संतुलन को बहुत प्रभावित किया है। इससे ग्रामीण आय, शिक्षा, स्वास्थ्य और पर्यावरणीय संतुलन में काफी सुधार हुआ है। सतत विकास ग्रामीण समाज को आत्मनिर्भर बनाने में सहायक सिद्ध हो रहा है, हालाँकि ग्रामीण क्षेत्रों के सतत विकास हेतु तकनीकी शिक्षा, वित्तीय सहायता और जन जागरूकता की आवश्यकता है। ग्रामीण भारत के समग्र विकास हेतु सतत विकास की नीतियों को प्रभावशाली रूप से लागू करना अत्यंत आवश्यक है। विभिन्न योजनाओं का सही ढंग से क्रियान्वयन कर गांव को आत्मनिर्भर और समृद्धशाली बनाया जा सकता है।

संदर्भ

1. Bhattacharyya, Sangeeta and Others, (2025) The Models and the Aspiring Models: Assessing the Sustainable Rural Development Philosophy and Reality in India through Multi-dimensional Indices, Frontiers, Sustainable Food Systems, Vol.9 <https://doi.org/10.3389/fsufs.2025.1561399>
2. Brundtland, G.H.(1987), Our Common Future, World Commission on Environment and Development, Oxford University Press
3. Desai, A.R. [1969], Rural Sociology in India, Popular Prakashan, Bombay <https://books.google.co.in>
4. Ghosh, Madhusudan, (2017), Infrastructure and Development in Rural India, Margin The Journal of Applied Economic Research, Vol.11, No. 3, Pg. 256-289 DOI: 10.1177/0973801017703499 <https://share.google/s1cYexcfGNfHYdwq>
5. Jangir, M. and Dr. Nidhi Nalwaya (2023), Rural Sustainable Development-5'S Framwork of SHG's, Gap Gyan: A Global Journal of Social Sciences, Vol.6, No.3, Pg. 50-57 <https://www.gapgyan.org>
6. Pathak, Vaidehi and Sameer Deshkar (2023), Transitions towards Sustainable and Resilient Rural Areas in Revitalising India: A Framwork for Localising SDGs at Gram Panchayat Level, Sustainability, Vol.15, No.9, Article7536 <https://doi.org/10.3390/su15097536>

7. Srinivas, K. J. and B. Sai Giridhar (2021), Pathway to Achieve Sustainable Rural Development in India, Academia Letters, Article 2298 DOI: 10.20935/AL2298
8. <https://vajiramandravi.com/upsc.exam/sustainabledevelopment>
9. <https://www.smsfoundation.org/role-of-community-participation-and-its-impact-on-sustainability-in-rural/>
10. <https://www.niti.gov.in>